CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA
ISSN 2231 - 2137

गाँधीवाद का भावात्मक रूप और सियारामशरण गुप्त का काव्य

डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश

Received: 30/01/2019	Edited: 06/02/2019	Accepted: 12/02/2019

शोध-सारांश: 'हिन्दी साहित्य में गुप्त जी ने अपनी अलग पहचान बनाई है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई कवि गाँधी जी से प्रभावित हुए पर गाँधी का सबसे अधिक प्रभाव सियारामशरण गुप्त पर ही पड़ा। गुप्त जी आशावादी संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी थे। संघर्षशील जीवन-यापन करते हुए, कंटकाकीर्ण पथ अडिग, सदाचारी, परिश्रमी, अहिंसक एवं देशभक्त रहकर आपने अपने को गाँधी के निकट पहुँचाया है। जिस प्रकार एक साहित्यकार अपनी उन्मुक्त सोच के साथ हृदय के सभी द्वार खोल कर अपनी लेखनी चलाता है उसी प्रकार आपकी काव्यपंक्तियाँ भी बन पड़ी हैं' |

बीज-शब्द : गाँधीवाद, भावात्मक-स्वरुप, अहिंसा, सदाचार, अत्याचार, वैष्णव-वृत्ति.

"दीप, तू जागृत रहा है रात भर/और मैं बेसुध पड़ा सोता रहा।/हाय, अत्याचार यह निज गात पर,/स्नेह - सह तू प्रज्ज्वलित होता रहा।" यह पंक्तियाँ हैं बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार सियारामशरण गुप्त कीA जिनका जन्म भाद्रपद पूर्णिमा सम्वत् 1952 विक्रमी तद्नुसार 4 सितम्बर 1895 ई. को सेठ रामचरण कनकने के परिवार में मैथिलीशरण गुप्त के अनुज-रुप में चिरगांव, झाँसी में हुआ था। प्राइमरी शिक्षा पूर्ण कर घर में ही गुजराती, अंग्रेज़ी और उर्दू भाषा सीखी। सन् 1929 ई. में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और कस्तूरबा के सम्पर्क में आये। कुछ समय वर्धा आश्रम में भी रहे। सन् 1940 ई. में चिरगांव में ही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का स्वागत किया। वे सन्त विनोबा भावे के सम्पर्क में भी आये। उनकी पत्नी तथा पुत्रों का निधन असमय ही हो गया। मूलत- आप दु:ख वेदना और करुणा के कवि बन गये। साहित्य के आप मौन साधक बने रहे।[1] सियारामशरण गुप्त के यहाँ पैतृक व्यवसाय होता था, लेन-देन आदि का जिसमें उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक है। पर इस व्यवसायकिता के बीच जो तथ्य उल्लेखनीय हैं, वह है- उस परिवार की उदारता और वैष्णव भक्ति में आस्था। पिता रामचरण कनकने के नाम से जाने जाते थे और आस-पास के क्षेत्रों में उनका मान था। सम्पन्नता के साथ, उनमें जो दान शीलता थी उसके कारण उनकी वैष्णव वृत्ति में निरंतर विकास होता गया। यह वैष्णव भावना मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त दोनों कवियों में समान रूप से देखी जा सकती है। पिताश्री विद्वानों का आदर करना जानते थे और सत्संग उन्हें प्रिय था। इसी क्रम में अजमेरी जी मिले जो गुप्त परिवार के घनिष्ठ बने, जिन्हें लोगों ने परम-वैष्णव कहा, यद्यपि वे जन्म से मुसलमान थे। यह है इस परिवार की उदार धर्म निरपेक्ष दृष्टि।[2] इनकी माँ काशीबाई धार्मिक विचारों की महिला थी। इनकी विचारधारा का पूर्ण प्रभाव इनके पुत्रों पर पड़ा।

हिन्दी साहित्य के देदीप्यमान-नक्षत्र सियारामशरण गुप्त के साहित्य में मानव प्रेम के कारण कवि का निजी दु:ख, सामाजिक दु:ख के साथ एकाकार होता हुआ वर्णित हुआ है। विषाद में कवि ने अपने विधुर जीवन और आर्द्रा में अपनी पुत्री रमा की मृत्यु से उत्पन्न वेदना के वर्णन में जो भावोद्गार प्रकट किए हैं, वे बच्चन के 'प्रियावियोग' और निराला जी की 'सरोजस्मृति' के समान कलापूर्ण न होकर भी कम मार्मिक नहीं हैं। इसी प्रकार अपने हृदय की सचाई के कारण गुप्त जी द्वारा वर्णित जनता की दरिद्रता, कुरीतियों के विरुद्ध आक्रोश, विश्व शांति जैसे विषयों पर उनकी रचनाएँ किसी को भी पाठ पढ़ा सकती हैं। हिंदी में शुद्ध सात्विक भावोद्गारों के लिए गुप्त जी की रचनाएँ स्मरणीय रहेंगी। उनमें जीवन के श्रृंगार और उग्र पक्षों का चित्रण नहीं हो सका किंतु जीवन के प्रति करुणा का भाव जिस सहज और प्रत्यक्ष विधि पर गुप्त जी में व्यक्त हुआ है उससे उनका हिंदी काव्य में एक विशिष्ट स्थान बन गया है। हिंदी की गांधीवादी राष्ट्रीय धारा के वह प्रतिनिधि कवि हैं।

कविवर सियारामशरण गुप्त अध्ययनशील प्रवृत्ति के थे। इनकी आरंभिक शिक्षा गाँव की ही पाठशाला में हुई। अपर प्राइमरी तक की शिक्षा पूर्ण करने के बाद पढ़ना चाहते थे लेकिन गाँव में हाईस्कूल नहीं था साथ ही पारिवारिक परिस्थितियों के कारण आगे न पढ़ सके। लेकिन अध्यवसायी वृत्ति जो उनमें जन्मजात थी, उसके कारण घर पर ही संस्कृत, बंग्ला, गुजराती तथा अंग्रेजी सीखी। "अंग्रेजी विद्वान 'टेनिस' की अंग्रेजी कविता का अनुवाद भी किया।[3] प्रेमशंकर ने लिखा है- "उन्होंने अपने श्रम और अध्यवसाय से इसकी क्षति पूर्ति की। 'रामचरितमानस' उनका प्रिय ग्रंथ था, जिसके संस्कार उन्हें वैष्णव पिता से प्राप्त हुए थे। उन्हें संस्कृत के श्लोक कंठस्थ थे और उन्होंने अंग्रेजी का अभ्यास स्वयं किया। वे उस समय की पत्र-पत्रिकाओं में रुचि लेते थे, जिनमें प्रमुख थीं, 'सरस्वती' जिसमें उनकी रचनाएँ भी आयीं। आश्चर्यजनक यह है कि बुन्देलखण्ड में रहकर भी उन्होंने बंग्ला भाषा का ज्ञान पुस्तक की सहायता से प्राप्त किया और कवीन्द्र रवीन्द्र का उन पर गहरा प्रभाव है।" [4]

महान कवि सियारामशरण गुप्त जी का विवाह 'बड़ागाँव' निवासी देवकीनंदन कारखिमऊ की एक मात्र संतान शंकरबाई के साथ हुआ। उस समय की प्रचलित परम्परा के अनुसार, जब वे आठ वर्ष के थे, तभी विवाह बंधन में बंध गए थे। उनका विवाह धूमधाम से संपन्न हुआ था। ससुराल पक्ष धनी-मानी था। अनुज, चारु शीलाशरण ने लिखा है- "भैया के ससुर अच्छे धनी गिने जाते थे। तीन-चार गाँव में उनकी जमींदारी भी थी। सोना-चाँदी भी यथेष्ट था। उनका विचार था कि विवाह के कुछ दिन पश्चात् जमाई को अपने ही यहाँ रख लेंगे, परन्तु यह उनका भ्रम ही था। अर्थ के लाभ पर हमारा सम्मान ही विजयी रहा। अंत में मरने से कुछ पूर्व निराश होकर वे एक लड़के को अपना उत्तराधिकारी बना गए।" [5] इनकी पत्नी का देहान्त 1922 ई. में हुआ। ये साधु वृत्ति ही थी कि उन्होंने दूसरा विवाह न किया। उनके चार संताने हुईं लेकिन एक भी जीवित न रहीं। वे शोक संतप्त तो हुए पर धैर्य नहीं खोया। वे कहते मेरी रचनाएँ ही मेरी संतान हैं।

सुयशी कविवर सियारामशरण गुप्त के घर का वातावरण साहित्यिक होने के कारण उनका रूझान भी साहित्य की ओर होने लगा। अग्रज मैथिलीशरण गुप्त की चर्चा पत्र-पत्रिकाओं में होती रहती। अतः उनके आरंभिक प्रेरणा स्रोत मैथिलीशरण गुप्त ही हैं। पहले तो वे सबसे छिपकर काव्य रचना करते थे लेकिन दादा के आदेश पर कविता बनाई वहीं से इन्हें बल मिला और निरंतर साहित्य सृजन में संलग्न रहे। दद्दा ने स्वयं लिखा है- "साहित्य की ओर पहले से ही उनकी प्रवृत्ति थी। साहित्य सदन का काम भी कितना था, रचना के लिए समय का अभाव उन्हें न था। परन्तु जैसा उन्होंने बाल्य स्मृति में लिखा है, अपनी पद्य रचना लेकर वे सीधे मेरे निकट नहीं आये। फिर भी यह एक ऐसी मिठाई थी, जो अकेले-अकेले नहीं खाई जा सकती थी। यही नहीं, दूसरों को खिलाकर ही इसमें तृप्ति मिल सकती थी। परन्तु भय संकोच भी थोड़ा न था।..... परन्तु जो हो, मुझे एक सतीर्थ मिल जाने से संतोष ही हुआ। जितना सहयोग मैं दे सकता था, मैंने उन्हें दिया। मेरे लिए इससे अधिक क्या संतोष होगा कि आज वह सहयोग हम दोनों में पारस्परिक हो गया।" [6] सियारामशरण गुप्त ने अनेक काव्य-ग्रंथों की रचना की। उनमें प्रमुख हैं- "मौर्य-विजय, अनाथ, विषद, आर्द्रा आत्मोत्सर्ग, पाथेय, मृण्मयी, बापू, उन्मुक्त, नोआखाली में, जय हिन्द, अमृत पुत्र आदि। 'मौर्य विजय' प्रथम रचना सन् 1914 में लिखी। आपकी समस्त रचनाएं पांच खण्डों में संकलित कर प्रकाशित हैं। 'आर्द्रा, 'दुर्वादल, 'विषाद, 'बापू तथा 'गोपिका इनकी मुख्य काव्य-कृतियाँ हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'गोद, 'नारी, 'अंतिम आकांक्षा (उपन्यास), 'मानुषी (कहानी संग्रह), नाटक, निबंध आदि लगभग 50 ग्रंथ रचे। सहज आकर्षक शैली तथा भाव और भाषा की सरलता इनकी विशेषता है।गुप्त जी के काव्य की विशेषता यही है कि उनके काव्य में सात्विकता के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। इसका एक मात्र कारण है, उन पर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव। डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है- "हिन्दी में गाँधी जी के तत्व चिन्तन की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति उन्हीं में मिलती है और उन्होंने अपनी साधना के बल पर उसे अपनी चेतना का अंग बना लिया है। भारतीय चिन्तनधारा की एक विशेष महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति के वे अकेले कवि हैं।" [7]

सियारामशरण गुप्त की भाषा-शैली पर घर के वैष्णव संस्कारों और गांधीवाद का प्रभाव था। गुप्त जी स्वयं शिक्षित कवि थे। मैथिलीशरण गुप्त की काव्यकला और उनका युगबोध सियारामशरण ने यथावत् अपनाया था। अत: उनके सभी काव्य द्विवेदी युगीन अभिधावादी कलारूप पर ही आधारित हैं। दोनों गुप्त बंधुओं ने हिंदी के नवीन आंदोलन छायावाद से प्रभावित होकर भी अपना इतिवृत्तात्मक अभिधावादी काव्य रूप सुरक्षित रखा है। विचार की दृष्टि से भी सियारामशरण जी ज्येष्ठ बंधु के सदृश गांधीवाद की परदु:खकातरता, राष्ट्रप्रेम, विश्वप्रेम, विश्व शांति, हृदय परिवर्तनवाद, सत्य और अहिंसा से आजीवन प्रभावित रहे।

उनके काव्य वस्तुत: गांधीवादी निष्टा के साक्षात्कारक पद्यबद्ध प्रयत्न हैं। हिंदी में शुद्ध सात्विक भावोद्गारों के लिए गुप्त जी की रचनाएँ स्मरणीय रहेंगी। उनमें जीवन के शृंगार और उग्र पक्षों का चित्रण नहीं हो सका किंतु जीवन के प्रति करुणा का भाव जिस सहज और प्रत्यक्ष विधि पर गुप्त जी में व्यक्त हुआ है उससे उनका हिंदी काव्य में एक विशिष्ट स्थान बन गया है। हिंदी की गांधीवादी राष्ट्रीय धारा के वह प्रतिनिधि कवि हैं।[8(क)] सहज आकर्षक शैली तथा भाव और भाषा की सरलता इनकी विशेषता है। 'मैं तो वही खिलौना लूंगा मचल गया दीना का लाल/खेल रहा था जिसको लेकर राजकुमार उछाल-उछाल।/व्यथित हो उठी मां बेचारी- था सुवर्ण-निर्मित वह तो!/'खेल इसी से लाल, नहीं है राजा के घर भी यह तो!/ 'राजा के घर! नहीं-नहीं मां, तू मुझको बहकाती है,/इस मिट्टी से खेलेगा क्या राजपुत्र, तू ही कह तो।/फेंक दिया मिट्टी में उसने, मिट्टी का गुड्डा तत्काल,/'मैं तो वही खिलौना लूंगा - मचल गया दीना का लाल।/'मैं तो वही खिलौना लूंगा- मचल गया शिशु राजकुमार,/'वह बालक पुचकार रहा था पथ में जिसको बारंबार।/'वह तो मिट्टी का ही होगा, खेलो तुम तो सोने से।/दौड पडे सब दास-दासियां राजपुत्र के रोने से।/'मिट्टी का हो या सोने का, इनमें वैसा एक नहीं,/खेल रहा था उछल-उछलकर वह तो उसी खिलौने से।\राजहठी ने फेंक दिए सब अपने रजत-हेम-उपहार,/'लूंगा वहीं, वही लूंगा मैं! मचल गया वह राजकुमार ।

कवि की इस सहजता में साहित्य का गाम्भीर्य-बोध भी हैA उनके अग्रज मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है- "मैं ठीक नहीं कह सकता, गुरुदेव और बापू दोनों में से वे किससे अधिक प्रभावित हुए। परन्तु यह स्पष्ट है कि उनके लिखने की शैली, अलंकृत भाषा की दृष्टि से गुरुदेव की अनुगामनी है और वे उनके बापू के अनुयायी हैं ।" [8(ख)] उदाहरण स्वरूप इस रचना को देखा जा सकता है - है तेरे तीर्थ-सलिल से प्रभु हे!/मेरी गगरी भरी-भरी।/कल-कल्लोलित धारा पाकर/तट पर ही यह तरी-तरी।/तेरे क्षीरोदधि का पदतल,जहां शांति लक्ष्मी है अविचल,/फुल्लित-फलित जहां मुक्ताफल,/नहीं ला सकी पहुंच वहां की,/पुण्य-सुधा कल्याण-करी।/पाया, पा सकती थी जितना,/अधिक और भरती यह कितना,/कम क्या, कम क्या, कम क्या इतना?/गहरी नहीं जा सकी तब भी,/तृप्ति पिपासा हरी-हरी।/तेरे तीर्थ सलिल से प्रभु हे,/मेरी गगरी भरी-भरी।

प्रेमशंकर ने लिखा है- सभी ने इसे स्वीकारा है कि सियारामशरण गुप्त हिन्दी साहित्य में गाँधीवाद के सर्वोपरि कवि कहे जा सकते हैं। दोनों कवि बंधु मैथिलीशरण गुप्त-सियारामशरण गुप्त गाँधीवाद से प्रभावित हैं, पर उनकी संवेदना दृष्टि में किंचित अन्तर है। राष्ट्रकवि 'भारत भारती' जैसे काव्य की रचना करते हैं- भारत की स्वतंत्रता का उद्घोष करते हुएः भगवान भारतवर्ष में, गूँगे हमारी भारती अथवा जग जाये तेरी नोक से, सोए हुए को हो भाव जो, पर सियारामशरण की अधिक रुचि गाँधीवाद के दार्शनिक पक्ष में है।" [9] 'क्षुद्र सी हमारी नाव,/चारो ओर है समुद्व/वायु के झकोरे उग्र रुद्र रूप धारे हैं।/शीघ्र निगल जाने को नौका के चारो ओर/सिंधु की तरंगे सौ-सौ जिव्हाएँ पसारे हैं'।/सुनसान कानन भयावह है चारो ओर,/दूर दूर साथी सभी हो रहे हमारे हैं।/काँटे बिखरे हैं, कहाँ जावें कहाँ पावें ठौर/छूट रहे पैरों से रुधिर के फुहारे हैं'।

गाँधी जी पर इनकी अटूट आस्था थी इसलिए इनकी रचनाओं में गाँधीवाद की अमिट छाप दिखती है। डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है..... "गाँधीवाद में इनकी अटूट आस्था थी, इसलिए इनकी सभी रचनाओं पर अहिंसा, सत्य, करुणा, विश्वबंधुत्व, शांति आदि गाँधीवादी मूल्यों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।" [10] हो सकती भव-बीच नहीं क्या कोई नूतन बात?/आ जा आज यहाँ फिर से तू सम्मित पुलकित गात।/होती रहती है कितनी ही बातें नव नव नित्य;/यह विषाद हो जाय आज यदि किसी स्वप्न का कृत्य'! ललित शुक्ल ने लिखा है- "गाँधीवादी विचारधारा का जितना प्रभाव सियारामशरण जी की लेखनी पर है, उनके व्यक्तित्व पर उससे किसी रूप में कम नहीं है।" [11] डॉ. विजयेन्द्र स्नातक ने "सियारामशरण जी को गाँधीवाद का भावात्मक व्याख्याता कहा है।" [12]

इस प्रकार हिन्दी साहित्य में गुप्त जी ने अपनी अलग पहचान बनाई है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई कवि गाँधी जी से प्रभावित हुए पर गाँधी का सबसे अधिक प्रभाव सियारामशरण गुप्त पर ही पड़ा। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार- 'अप्रत्यक्ष रूप से तो आज अधिकांश साहित्य पर गाँधी-दर्शन का गहरा और अन्तःव्यापी प्रभाव है, परन्तु प्रत्यक्ष रूप में उससे सीधी प्रेरणा लेने वाला तथा उसे समग्र रूप में स्वीकार करने वाला साहित्य परिमाण में अत्यन्त अल्प है। सियारामशरण ने हृदय और बुद्धि दोनों का गाँधी दर्शन के साथ पूर्ण सामजस्य कर लिया है। वह उनकी आत्मा में रम गया है।" [13] गुप्त जी आशावादी संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी थे। संघर्षशील जीवन-यापन करते हुए, कंटकाकीर्ण पथ अडिग, सदाचारी, परिश्रमी, अहिंसक एवं देशभक्त रहकर आपने अपने

को गाँधी के निकट पहुँचाया है। जिस प्रकार एक साहित्यकार अपनी उन्मुक्त सोच के साथ हृदय के सभी द्वार खोल कर अपनी लेखनी चलाता है उसी प्रकार आपकी काव्यपंक्तियाँ भी बन पड़ी हैं - 'इसी कक्ष में, यही लेखनी ले कर इसी प्रकार/बैठा मैं कविता लिखने को जाने कितनी बार।/यहीं इसी पाषाण पट्ट पर, खोल हृदय के द्वार/खेली मेरी काव्य कल्पना निर्भय, निर्लंकार'।

संदर्भः

1. संजीवनी टुडे 29-03-2017,
2. सियारामशरण गुप्त: प्रेमशंकर, पृ. 10
3. सियारामशरण गुप्त रचनावली (खण्ड- 1): सं. ललित शुक्ल, पृ. 4
4. सियारामशरण गुप्तः प्रेम शंकर, पृ. 10
5. सियारामशरण गुप्त रचनावली (खण्ड- 1): सं. ललित शुक्ल, पृ.2
6. सियारामशरण गुप्तः डॉ. नगेन्द्र, पृ.36
7. आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृतियाः डॉ. नगेन्द्र, पृ.10

8(क). संजीवनी टुडे 29-03-2017

8(ख). सियारामशरण गुप्तः डॉ. नगेन्द्र, पृ.8

9. सियारामशरण गुप्तः प्रेम शंकर, पृ. 12
10. हिन्दी साहित्य का इतिहासः आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. 538
11. सियारामशरण गुप्तः सृजन और मूल्यांकनः डॉ. ललित शुक्ल, पृ. 356
12. हिन्दी साहित्य का इतिहासः आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. 241
13. सियारामशरण गुप्तः सं. डॉ. नगेन्द्र, पृ. 98